

ઈસ્લામ ખાલિફ કયા છે ?

લેખક : મુહમ્મદ ઈસ્માઈલ ઝતારિગર

ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભુજ - કચ્છ.

Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

लम्हा-अ-इक

आज कल के कुछ मुसलमान कुरआन और हदीस पर अमल करने वालों को नया इरका (गिरोह) और नये मजहब के नाम से बुलाते हैं और इर एस से आगे बढ़कर चारों इमामों में से किसी एक इमाम की तकलीफ न करनेवालों को गैर मुकल्लिह और इस्लाम के दाअरे से बाहर होने का नाम देते हैं और नमालूम किन किन नामों से बुलाते हैं, आज़िर एस कुरआन और हदीस पर अमल करने की बुनियाह कब से है?

आम लोगों की जानकारी के लिये एस किताब को सहीह हवालों और सालों की तरतीब से पेश किया जा रहा है, एस किताब का मकसद सिई शुरुआत के सालों को बतलाना है कि कुरआन और हदीस पर अमल कब से है और तकलीफे शप्सी (किसी एक शप्स की बात को बिला दलील मानना) कब से शुरू हुअ, साथ ही चार इमामों के नाम पर चार मस्लक कब से और यह किस तरह इस्लाम में दाबिल किये गये, इर एसके बाद तदपीने हदीस (हदीसों का जमा किया जाना और लिजा जाना) और तदपीने इक्ह (इक्ह का लिजा जाना) कब से शुरू हुआ, एसके अलावा इमामों के अकपाल को पेश करके तइसील के साथ लिजा गया है ताकि एसे जांचा जाये कि पुराने कौन है और नया क्या है?

अकसर उलमा-अ-सलइ ने इरकों के बारे में बडी बडी किताबें लिजी हैं, लेकिन हमें उन तइसीलात में जाना नहीं है. इस्लामी भाइयो ! मेरी आप से सिई यही गुआरिश है कि इप्लास की बुनियाह पर, तअरसुब और दुश्मनी की यादर को हटाकर, इस्लाह की निव्यत रजते हुअे, इन्साइ के साथ गौर व इक करे और मजहब या मस्लक के नये और पुराने होने का जाओऊा लें.

हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका मकडी और मदनी दौर २३ साल, जुलइआये राशिदीन रअियल्लाहु अन्हुम का दौर ३० साल और सहाबा रअियल्लाहु अन्हुम का दौर तकरीबन ५० साल रहा, एस तरह

तकरीबन १० सारे लोगों का दौर सन १ हिजरी से सन ११० हिजरी तक रहा। वे सब के सब मुसलमान अल्लाह की वही यानी कुरआन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत और आपके इरमान की पैरवी करते थे, यानी कुरआन और हदीस पर उनका अमल था, यह पहली सदी के मुसलमान, इस्लाम पर मरनेवाले और इस्लाम को याहनेवाले लोगों की तादाद में थे।

१०के बारे में एक सवाल जुट बजुट पैदा होता है कि वे मुसलमान किस इमाम के मुकदिलद थे? और किस इमाम के नाम से पुकारे जाते थे? क्या वे मुसलमान हनफी, मालिकी, शाफ़ी या हम्बली थे?

दूसरा सवाल यह पैदा होता है कि क्या १० इमामों के अलग-अलग मज़ाहब उस वक़्त पाये जाते थे?

तीसरा सवाल यह पैदा होता है कि पहली सदी के मुसलमान, रसूल की उम्मत, जुलफ़ाये राशिदीन और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम जो कुरआन और हदीस पर अमल करते थे, तो आज कल के कुछ मुसलमानों के कहने के मुताबिक यह इस्लाम उन पर भी लग सकता है?

१० सारे सवालों का जवाब हर हाल में “नहीं ” में ही होगा, क्योंकि पहली सदी हिजरी में चारों इमामों का नाम व निशान ही न था और न उनकी पैदाइश ही हुई थी। ऐसी सूरत में यह बात साबित हो गई कि तकलीदे शरफ़ी और इमामों की निरुबत और इमामों के मज़ाहब पहली सदी में नहीं पाये जाते थे, इस बात की सख्याइ टोपहर के सूरज की तरह चारों इमामों की तारीफ़े पैदाइश से साबित होती है। युनांये अबू हनीफ़ा रहमहुल्लाह सन ८० हिजरी में पैदा हुये और इमाम मालिक रहमहुल्लाह सन ८३ हिजरी में पैदा हुये और दूसरे इमाम, इमाम शाफ़ी और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमहुल्लाह दूसरी सदी हिजरी में पैदा हुये हैं।

तो ऐसे बे-बुनियाद इलज़ाम लगानेवालों को तोबा करनी चाहिये और इस तरह की गुस्ताफी से अपने आप को रोक लेना चाहिये। नामालूम इस किस्म के लोग कियामत के दिन अल्लाह के यहां क्या जवाब देंगे जबकि दुनिया में उनके पास कोई जवाब नहीं।

ઇસ તફ્સીલ સે સાફ ઝાહિર હૈ કિ : “ઇસ્લામ નામ હૈ કુર્આન ઓર હદીસ પર અમલ કરને કા. ઇસ્લામ મહદૂદ હૈ કુર્આન ઓર હદીસ કે દાએરે મેં. ઇસ્લામ મુકમ્મલ દીન હૈ” ઇસકી તસ્દીક અલ્લાહ કી કિતાબ કુર્આન સે હોતી હૈ. અલ્લાહ તઆલાને હમારે નબી મુહમ્મદ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કે આખિરી હજ કે મોકે પર યહ આયત : “આજ મેંને તુમ્હારે દીન કો કામિલ કર દિયા ઓર તુમ પર અપની નેઅ્મત પૂરી કર દી હૈ ઓર તુમ્હારે લિએ ઇસ્લામ કે દીન હોને પર રાઝી હો ગયા.” (સૂરતુલ માઈદહ : ૫, ૩)

નાઝિલ ફરમાકર ઇસ્લામ કે મુકમ્મલ હોને કી મુહર લગા દી, ઇસકા કોઈ મુસલમાન ઇન્કાર નહીં કર સકતા. ઇસલિએ ઇસ આયત કી મોજૂદગી મેં કિસી મુસલમાન કો હરગિઝ યહ હક નહીં હો સકતા કિ ઇસ્લામ મેં કોઈ નઈ ચીઝ દાખિલ કરે યા કોઈ ચીઝ ઇસ્લામ સે નિકાલે યા કિસી ચીઝ કી કમી સમઝકર ઉસમેં કુછ બઢાએ. અગર કોઈ મુસલમાન ઇસ્લામ મેં ઇસ કિસ્મ કી બુરી હરકત કરેગા તો વહ નઉઝુબિલ્લાહ ઇસ આયત કા ઇન્કાર કરને વાલા હોગા ઓર એસે લોગોં કા કિયામત મેં કયા અંજામ હોગા? ઝરા ગોર કરે.

અલ્લાહ તઆલા ને કુર્આને કરીમ મેં બાર બાર તાકીદ કે સાથ કઈ જગહ ફરમાયા : “ફરમાંબરદારી કરો અલ્લાહ કી ઓર ફરમાંબરદારી કરો રસૂલ કી” (સૂરતુલ તગાબુન : ૬૪, ૧૨)

ઓર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કા ફરમાન હૈ, મૂસા અલયહિસ્સલામ કી ઉમ્મત મેં ૭૨ ફિરકે થે, મેરે બાદ મેરી ઉમ્મત મેં ૭૩ ફિરકે હોંગે, જિન મેં સે ૭૨ ફિરકે જહન્નમી હોંગે ઓર એક ફિરકા જન્નતી હોગા. સહાબ-એ-કિરામ રઝિયલ્લાહુ અન્હુમને પૂછા : એ અલ્લાહ કે રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ વહ કોનસા ફિરકા હોગા? આપને ફરમાયા, “જિસ રાહ પર મેં હૂં ઓર મેરે સહાબા હૈ.”

પસ જબ કિ હમારે નબી મુહમ્મદ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને જન્નત કે રાસ્તે કી પહચાન સાફ તોર પર બતલા દી હૈ, તો ફિર હમેં દૂસરે રાસ્તે કી જરૂરત બાકી ન રહી. ઇસકે બાવજૂદ અગર કોઈ શખ્સ કિસી ઉમ્મતી કે તોર તરીકે કો અહમિયત દેતા હો ઓર ઉસ પર અમલ કરતા હો તો વહ કિસ મકામ કો હાસિલ કરતા હૈ ખુદ અપની અકલ સે ફૈસલા કર લે.

मेरे प्यारे दोस्तो ! इससे साफ़ मालूम हुआ कि इस्लाम सिर्फ़ कुरआन और हदीस है, इस पर अमल करनेवाला दुनिया और आज़िरत में कामियाबी का हकदार है. यह इस्लाम शुरुआत ही से है, कोई नया मज़हब नहीं है और ना ही नया झिंका है, बल्कि यह एक जमाअत है जो कुरआन और हदीस पर अमल करती है.

जब तब्दीने हदीस के बारे में हम गौर करते हैं तो पता चलता है कि हदीसों का जमा किया जाना नुबुव्वत के दौर ही से शुरू हुआ है. हदीस का एक बड़ा मजमुआ नुबुव्वत के दौर में मौजूद था. इसके बाद एक दूसरे से जुलफ़ा-अ-राशिदीन और सहाब-अ-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के पास पहुंचता रहा. किसी ने लिख लिया, तो किसी ने ठबानी याद कर लिया. अगर यह न होता तो कुरआन और अल्लाह के रसूल की सुन्नत पर अमल करना नामुम्किन था. इसलिये पहली सदी हिजरी में हदीस का मजमुआ पाया जाना साबित है.

इसके बाद दूसरी सदी में चारों इमामों और मुहद्दीसीन ने और भी हदीसों को इकट्ठा करके हदीस की किताबें लिखी हैं. यह बात साबित हो चुकी है और दुनिया के सभी उलमा-अ-किराम ખાસ और आम इसकी तस्दीक करते हैं और इससे मुतफ़्कि हैं.

दूसरी और तीसरी सदी हिजरी का दौर इमाम और मुहद्दीसीन का रहा, उस वक़्त अगर कोई मस्अला पेश आता तो लोग इमामों से पूछते, वे कुरआन और हदीस से या अपनी राय और क़ियास (अंदाज़े) पेश करते हुअे अल्लाह के डर और तक्वे की बिना पर साफ़ बता देते थे कि अगर यह कुरआन और हदीस के खिलाफ़ हो, तो इसे छोड़ दो. इस लिहाज़ से गोया सभी इमामों और उस दौर के मुसलमान कुरआन और हदीस पर ही अमल करते थे. सभी इमामों ने अच्छी और सख़्खी बातें कही हैं. उनकी कही हुअे बातें काबिले अहतिराम हैं जो आगे किताब में लिखी गइ हैं. वह अइम्मा इबादतगुज़ार और मुतकी, परहेज़गार और तौहीद परस्त, सुन्नत की पैरवी करनेवाले, कुरआन और हदीस के पाबन्द, सलइ़े सालिहीन का नमूना थे. किसी ने भी अपनी तकलीद और झिंकाबन्दी की तरफ़ नहीं बुलाया है और

ना ही कोई अपनी तरफ से अलग-अलग मजहब और मस्लक बनाकर डे जारी किया. इसलिये उनके अकपाल डे मुताबिक:

“अगर हो मुकदिलद तो अमल करके बताओ
बनते हो पड़ादार तो पड़ा करके बताओ.”

अल्लाह तआला अहम्मा-अ-किराम की कब्रों को नूर से भर डे और उन्हें अपनी रहमत से नपाडे, आमीन.

मेरे प्यारे भाइयो ! पहली सदी तो क्या तीसरी सदी में भी तकलीडे शप्सी और एमामों की तरफ निस्बत डे नाम का डिरका हनडी, मालिकी, शाइफ, हम्बली का पजूद ही ना था. होश प हवास से कहो कि नया क्या है और पुराना क्या है?

योथी सदी से तकलीडे शप्सी की शुआत हुड, मगर एमामों डे नाम पर बने मसलकों का पजूद अमल में ना आया था. यहां यह बात मान लेनी होगी कि योथी सदी हिजरी में भी एन एमामों डे नाम पर बने मसलकों का नाम कहीं दूर दूर तक न था.

अब डिकह की किताबों की शुआत कब से हुड है एसे पेश किया जा रहा है, इसके बाद तकलीडे शप्सी की निस्बत और आगे तस्लील से पेश की जाओगी.

डिकह की पहली किताब कुदूरी ४२८ हिजरी में लिखी गड है, इसके बाद दूसरी और डिकह की किताबें लिखी गड. इस तरह डिकह कि किताबों का लिखा जाना पांचवीं सदी से शुड हुआ है. अगर हम तारीख पढ़ें और डेजे तो पता चलता है कि हदीसों डे जमा करने और लिखे जाने कि बुनियाद इस्लाम डे शुआती दौर ही से है और इस्लाम की बुनियाद भी कुरआन और हदीस ही है. लिहाजा कुरआन और हदीस पर अमल पुराने उमाने से होना सूरज की रौशनी की तरह साइ है.

तकलीडे शप्सी डे बारे में और तस्लील यह है कि योथी सदी या छडी सदी हिजरी तक तकलीड का सिलसिला जारी रहा. जब इसकी रस्तार दिन ब दिन बढ़ती गड तो उस पकत डे बादशाहों का भी जुकाव तकलीड की तरफ होता गया. यहां तक कि ५५५ हिजरी में बादशाहों की तरफ से अकसर जगहों पर डिरकाबन्दी डे साथ एमामों डे नाम पर हनडी, मालिकी, शाइफ, हम्बली

मऊहब के चार काळी मुकर्रर हुअे. एस ललअे सातवीं सदी से एन नामों की नलरुबत लोगों के सामने आए और तकलीदे शरूसी का दौर शुअ हुआ. एस तरह एन क्लरकों और मऊहबों को सातवीं सदी में एरुलाम में दाखल कलया गया. यहां अेक भास बात गौर करने की यह है कल सातवीं सदी में अेक खालिस एरुलाम के चार हलरसे कर के क्लरह की कलताबों को मऊहबे अएम्मा पर तरतीब दे कर मऊहब का अेक अेक हलरसा एमामों की तकलीद करनेवालोंने अपना ललया. और हेरत की बात तो यह है कल एसको पुराना करार दलया जाता है और एरुलाम की शुअआत से सातवीं सदी तक के कुरआन और हदीस पर अमल करनेवालोंने नया क्लरका कहने कल हलम्मत करने लगते हैं, यह कलस कदर ना-एनुसाई की बात है.

खान रभो और यकीन करो कल आखलरत की पहली मंऑल कदर है खलसे आखलरत के एम्तहान का पहला परया कहना गेर मुनासलब न होगा. खलस में अल्लाह तआला की तरक से तीन सवाल कलअे खलअेंगे खलन में यह हरगलक न पूछा खलअेगा कल तेरा मऊहब कलस एमाम का है? और तेरा एमाम कोन है? बलकल तीन सवाल वही होंगे खे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहल व सल्लमने बतलाअे हैं.

तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? तेरा नबी कौन है?

एनके खवाल खूं देने होंगे और यह खवाल ली अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहल व सल्लमने साइ साइ बतला दलअे हैं : मेरा रब अल्लाह है. मेरा दीन एरुलाम है. मेरे नबी अल्लाह के बन्दे और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहल व सल्लम हैं. (अहमद/अबू दापूद)

एस तरह कदर में पूछे गये सवालोंने खवाल से काखलयाबी होगी और कदर के अऑाब से छुटकारा खललेगा. एन सवालोंने सहीह खवाल उसी को नसीब होंगे खलस ने दुनलया की ऑलनुदगी में सलई एरुलाम पर अमल कलया हो. और अगर एसके बर-खललाइ अमल कलया हो तो ऑलहर है कल खवाल ली खललाइ ही होंगे. ऐसी सूरत में कदर का अऑाब कलखलमत तक होता रहेगा. एसके बाद हलसाब कलताब का दलन आअेगा, वहां सब के सब खमा होंगे, हर अेक अपने अपने अमल के मुताबलक बदला पाअेगा, उस वकत कोए कलसी के

काम न आयेगा. हां, कुरआन और हदीस के मुताबिक किये गये नेक और अच्छे आमाल ही कामियाबी का जरिया बनेंगे. नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम इरमाते है कि :

(रोजे महशर में) मैं अपने होठ (कौसर) पर सब से पहले पहुंचूंगा, जो मेरे पास से गुजरेगा वह इस होठ का पानी पियेगा और जिस ने पी लिया वह कभी प्यासा न होगा. कुछ लोग मेरे पास आयेगे जिन को मैं पहचानता हूंगा और वे भी मुझे पहचानते होंगे, (लेकिन) उनको मेरे पास आने से रोक दिया जायेगा. मैं कहूंगा कि यह मेरे उम्मीती हैं. लेकिन मुठ से कहा जायेगा, आप नहीं जानते कि आप के बाद इन लोगों ने क्या क्या नई बातें दीन में निकाली थीं. तो मैं कहूंगा, दूरी हो, दूरी हो, यानी ऐसे लोगों को मैं अपने पास से धुत्कार दूंगा.

(बुजारी व मुस्लिम)

एक दूसरी रिवायत का ज़ुलासा यह है कि, हश्र के दिन सारे लोग मिल कर आदम अलयहिस्सलाम के पास पहुंचकर कहेंगे कि आप अल्लाह तआला के पास हमारी सिफ़ारिश कीजिये. लेकिन वे कहेंगे कि मैं अल्लाह तआला के सामने जाने से डरता हूं, तुम्हारी सिफ़ारीश करने को तय्यार नहीं हूं, तुम सब कुलां कुलां के पास जाओ. तो फिर सारे लोग नूह, अब्राहीम, मूसा और इसा अलयहिमुस्सलाम के पास जायेंगे. वे सब के सब यही कहेंगे कि अल्लाह तआला के सामने जाने से हम डरते हैं और हम इस लाईक नहीं कि तुम्हारी सिफ़ारिश कर सकें, तुम सब आभिरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पास जाओ. आभीरकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पास पहुंचेगे तो आप सिफ़ारिश करने पर राजी हो कर अल्लाह के दरबार मकामे महमूद में सजदे में गिर जायेंगे और दूआ करेंगे. अल्लाह की इजाज़त से शफ़ाअत करके जन्नतमें पहुंचायेंगे. (बुजारी)

इन हदीसों से साफ़ दिजाय है कि होठे कौसर के पानी और रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी सिफ़ारिश उन लोगों को ही नसीब होगी जिन्होंने आपकी इरमांजरदारी करते करते अपनी आभिरी सांस छोडी होगी.

गौर करो ! जब अल्लाह तआला के पास पैगम्बरों से किसी की सिफ़ारिश न हो सकी तो फिर हमारे तुम्हारे जैसे उम्मीती का क्या शुमार, किस

गिनती में होंगे? गरज कि सिई हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ही सिझारिश कर सकेंगे. इसलिये इस्लाम जालिस यही है कि हम रसूल की पैरवी करनेवाले जनें, कुरआन और हदीस पर अमल करें. इसी में दीन, दुनिया और आजिरत की ललाई है.

तकलीदे शप्सी के बारे में जब हम देखते हैं तो इसकी तइसील यूं निकलकर आती है कि सातवीं और आठवीं सदी हिजरी में तकलीद का दौर तरककी पर रहा और वह इसलिये कि उसके इलने और कुलने में जादशाहों की पूरी मदद शामिल रही. नव्पी सदी हिजरी के शुरू में जादशाह इरह बिन बरकूक ने मकका बैतुल्लाह के अहाते में मुसल्ला इब्राहीमी के अलापा चार मुसल्ले हनफी, मालिकी, शाइफ और हम्बली मजहब के नाम से काईम कर दिये. हालांकि इस्लाम के शुरू दौर से नव्पी सदी हिजरी तक सिई अक ही मुसल्ला इब्राहीमी था. इस तरह यह नये चार मुसल्ले जादशाह की राय और हुकम से इस्लाम में दाजिल किये गये.

यह मुसल्ले नव्पी सदी से तेरहवीं सदी हिजरी तक बरकरार रहे. तकलीद करनेवाले मुकल्लिदीन अपने अपने मुसल्ले पर अपने मसलक के इमाम के साथ नमाज अदा करते रहे, अक मुसल्ले के जाद दूसरे मुसल्ले पर नमाज अदा करने का इन्तजाम था.

चौदहवीं सदी सन १३४३ हिजरी में शाह अब्दुल अजीज बानी सउदी हुकूमत ने इस्लाम में नये दाजिल हो चुके उन चारों मुसल्लों को जत्म कर के पहले की तरह सिई अक मुसल्ला इब्राहीमी को अपने मकाम पर काईम रजा, जो शुरू इस्लाम से था और जो आज तक है. उसी मुसल्ला इब्राहीमी से तमाम नमाजे अदा होती हैं, आज कल के हज पर जानेवाले लोगों से इसकी तस्टीक की जा सकती है.

मेरे इस्लामी भाईयो ! इन सारे वाकियात के बयान से यह नतीजा निकलता है कि कुरआन और हदीस पर अमल करने वाले हक पर हैं और शुरू इस्लाम से अब तक उस पर जमे हुये हैं और कियामत तक यह जमाअत बाकी रहेगी.

आज कल के कुछ मुसलमानों की मिसाल गुम्बद में आवाज

लगानेवालों की तरह है, उनकी आवाज लौट कर उन पर ही झिट होती है. वे अपने को पुराना और दूसरों को नया कहनेवाले जुट नये बनकर सब के सामने आ गये. यह तो ऐसे हो गया जैसे इल्जाम लगानेवाले जुट मुल्जिम बन गये.

मेरे मुसलमान भाइयो ! मुसलमान होने पर यह जरूरी होता है कि कुरआन और हदीस पर अमल करें, उसके बगैर मुसलमान होने का दावा झुठा है. इस्लाम के शुरु के मुसलमानों का और उस वक़्त से लेकर आज तक के मुसलमानों का अकीदा एक ही है और वह यह कि अल्लाह एक, कुरआन एक, रसूल एक. फिर आज हम सब मुसलमानों को क्या हो गया कि इस्लाम ज़ालिम कुरआन और हदीस पर अमल कर के दीन, दुनिया और आभिरत की ललाई हासिल नहीं कर पा रहे हैं? क्या आज इस्लाम से दूरी की वजह से हम दुनिया की मुसीबतों और परेशानियों में पड़े हुये नहीं हैं? क्या अल्लाह तआला की रहमत हम से दूर नहीं है? क्या यह नक़शा हमारे सामने नहीं है? अगर है ! तो फिर क्यों न हम अपनी जिन्दगी को इस्लामी जिन्दगी बनाये. आज के दौर में इस बात की सज़ा जरूरत है कि एक दूसरे पर इल्जामात के दरवाज़ों को बन्द कर दें, तंग नज़री को छोड़ दें, कुशादा नज़री से काम लें. इस्लामी तालीम हम से यह चाहती है और मक़सद भी यही है कि सारे मुसलमान आपस में भाई भाई बनकर रहें, इज्तीमाई जिन्दगी बसर करके नेक और एक हो जायें. अल्लाह के इरमान के मुताबिक़ अमली जिन्दगी गुज़ार कर अल्लाह तआला की नेअमते और रहमते हासिल करें.

आगे इसी मज़मून में नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके ज़माने में हदीसें लिखे जाने की दलीलें और दूसरी हदीस की किताबें, झिक्क की किताबों की तद्दीन, जुलफ़ाये राशिदीन का दौर, इमामों की पैदाइश और मुफ़्तसर इमामों की जिन्दगी और उनके अक़वाल की तद्दीलात पेश की गई है.

हमारी जिम्मादारी हक़ बात को पेश करना है, अल्लाह तआला तोड़ीक़ और हिदायत दे. आमीन.

मुहम्मद इस्माईल ज़रतारगर

अल्लाह के दीन की तरफ बुलाना

अल्लाह तआला अपने रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे इरमा रहा है कि, “हमने आप को सारे लोगों के लिये भूशामबरी सुनानेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा है.” (सूरह सबा : 34, 28)

इसके बाद अल्लाह तआला अपने रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को हुकम दे रहा है कि आप सारे लोगों को यह ऐलान करें कि, “ऐ लोगो ! मैं तुम सब की तरफ अल्लाह का रसूल हूँ.”

(सूरह अअ्राफ़ : 7, 158) इस के बाद फिर अल्लाह तआलाने अपने रसूल को अल्लाह के दीन की दापत देनेवाला बनाते हुअे इरमाया : “ऐ नबी हमने आप को गवाह, भूशामबरी देनेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा. आप अल्लाह तआला की तरफ से उसके दीन की दापत देनेवाले हैं और रौशन थिराग हैं.” (सूरह अहज़ाब : 33, 75-76)

इस ऐलान के बाद इस्लाम में दाखिल होने के लिये इन्सान को कलिम-अ-शहादत (तोहीद) का इकरार और इसके साथ ही रिसालत का इकरार करना जरूरी होता है. कलिम-अ-शहादत इस्लाम का पहला इकन है. इस कलिमे का जुबान से इकरार करनेवाला और दिल से यकीन रभनेवाला मुसलमान कहलाता है, इसके साथ ही अल्लाह और उसके रसूल के हुकम पर अमल करनेवाला इमानदार कहलाता है, गोया अमल से कलिम-अ-शहादत की तस्टीक होती है.

इसलिये कुरआन और हदीस पर अमल करना मुसलमान की निशानी है.

कुरआन और हदीस की तारीफ़

कुरआन : अल्लाह की किताब को कहते हैं जो लोहे महकूज़ से अल्लाह के हुकम से जिब्रिल अलयहिस्सलाम के ऊरीअे पहय से हमारे प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ऊरत के मुताबिक थोडा थोडा

करके २३ साल की मुदत में उतारा गया.

हदीस : हदीस के लुगवी माना “बात” के होते हैं.

अल्लाह तआला ने अपने कलामे पाक कुरआन में कुरआन को भी हदीस कहा है. “अल्लाह तआलाने बेहतरीन कलाम उतारा है.”

(सूरह जुमर : ३८, २३)

इस आयत में कुरआन को हदीस कहा गया है.

“पस अल्लाह तआला और उसकी आयतों के बाद यह किस बात पर इमान लाओगे?” (सूरह जसिया : ४५, ५)

इस आयत में कुरआन की आयात को हदीस कहा गया है.

“फिर अब इसके बाद किस बात पर इमान लाओगे?”

(सूरह अअ्राफ़ : ७, १८५)

तशरीह : अल्लाह की किताब और उसके रसूल के आ जाने के बाद भी यह सच्चे रास्ते पर न आये तो अब किस बात को मानेंगे?

इस आयत में अल्लाह की किताब कुरआन को हदीस कहा गया है.

अल्लाह तआलाने अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की बात को अपने कलाम पाक कुरआन में हदीस इरमाया है. “जब नबी ने अपनी कुछ बिवीयों से एक छुपी हुई बात कही.”

(सूरः तहरीम : ५५, ३)

अल्लाह के इरमान के मुताबिक कुरआन का हदीस होना और नबी की बात का भी हदीस होना सुरज से भी ज्यादा रौशन है.

इस्लामी इस्तीलाह में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की बात, आप ने जो अमल किया, और सहाबा के किसी अमल पर आप जामोश रहे, इन बातों को हदीस कहते हैं.

कुरआन और हदीस इस्लाम की बुनियाद हैं, इसकी तस्दीक अल्लाह तआला का कलाम कुरआन पाक करता है.

पहली सदी

नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का दौर :

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की नुबुव्वत का उमाना

मकका मुअज़्ज़मा में १३ साल रहा. इसके बाद अल्लाह के हुकम से मकका मुअज़्ज़मा से हिजरत करके मदीना तय्यबा पहुंचे. उसी वक़्त से सन हिजरी की शुरुआत हुई है. मदीना तय्यबा में नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का नबुव्वत का दौर १० साल रहा.

इस तरह पुरे २३ साल दौरे नबुव्वत के गुज़रे, इस मुद्दत में इस्लाम के थिराग की रोशनी सारी दुनिया में फैल गई, लाजों की तादाद में अरब और गैर अरब के मुशिरकीन इस्लाम में दाखिल होते गये. यह सब के सब मुसलमान अल्लाह की वहय (क़ुरआन) और रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इरमान (हदीस) की पैरवी करते थे. इसके बाद जुलझाअे राशिदीन का दौर तकरीबन तीस साल तक रहा, जिसकी तइसील नीचे लिखी जा रही है.

जुलझाअे राशिदीन का ज़माना (मिशक़ात ज़िल्द ४, पेज ५८)

१. अबू बक्र सिदीक रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िलाइत का दौर : सन ११ हिजरी से १३ हिजरी (२ साल, ३ महिने, ८ दिन)
२. उमर झाइक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का दौरे ज़िलाइत सन १३ हिजरी से २३ हिजरी (१० साल, ५ महिने, ४ दिन)
३. उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु का दौरे ज़िलाइत सन २३ हिजरी से ३५ हिजरी (१२ साल)
४. अली रज़ियल्लाहु अन्हु का दौरे ज़िलाइत सन ३५ हिजरी से ४० हिजरी (४ साल, ८ महिने)
इस तरह मुक़म्मल दौरे ज़िलाइत २८ साल, ५ महिने, १३ दिन तक रहा.

इस दौर के सभी मुसलमान सिई अल्लाह की वहय (क़ुरआन) और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम (हदीस) पर अमल करते थे. सहाबा क़िराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का दौर सन ४० हिजरी से १०० हिजरी तक रहा यानी तकरीबन साठ साल.

इस पहली सदी के आखिरी सहाबा क़िराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की तइसील नीचे लिखी जा रही है.

- १ मदीना तय्यबा के सहाबा में सहल बिन सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु ने

- सन ८८ हिजरी या ८१ हिजरी, ८५ साल या १०० साल की उम्र में पड़ा पाया. (रिवायत में इतिहास है)
२. बसरा के सहाबा में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुने सन ८० या ८३ हिजरी, जयादा से जयादा १०३ साल की उम्र में पड़ा पाया. (रिवायत में इतिहास है)
३. मकका मुअज़्ज़मा के सहाबा में अबुत् तूकैल आमिर बिन वासिला रज़ियल्लाहु अन्हु सब से आखरी सहाबी थे जिन्होंने सन १०० हिजरी या ११० हिजरी में पड़ा पाया. (रिवायत में इतिहास है)
- इस तरह पहली सदी के जन्म होने के साथ ही सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का दौर भी जन्म हुआ. पहली सदी के यह सारे मुसलमान कुरआन और हदीस पर अमल करते थे, इस्लामी तअलीम इन्हीं दोनों किताबों से ली जाती थी, इसके अलावा कोई दूसरी चीज़ न थी.

नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के जमाने में हदीसों के लिखे जाने और जमा किये जाने की दलीलें :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के जमाने में कुरआन मज्ज़द की तरह हदीसों भी लिखी जाती थीं, इसके बाद अहतिमाम व इन्तिज़ाम था.

१. इल्म और हदीस को लिख कर महकूज़ कर लिया करो.
(हाकिम बयानुल इल्म : जिल्द १, पेज नं. ३७)
२. हदीसों को लिखो, कोई हर्ज़ नहीं. (मज्मूउज़् जवाइद : पेज नं. ५०)
३. अबू शाह को मेरी हदीस और जुल्बा लिख कर दे दो.
(बुखारी व मुस्लिम)
४. (ऐ अबू राइअ) अपने दाओं हाथ से मेरी हदीस लिख लिया करो.
(तिर्मिज़ी ३८२)
५. कलिमा के इकरार करनेवाले मुसलमानों का नाम लिख कर मुझे दो.
(बुखारी : जिल्द १, पेज नं. ४३०)
६. मदीना के यहूदीयों को सहीइ-अ-अमन लिखवा कर दिया था.
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अपने और यहूद और

- दूसरे मुसलमानों के लिये अमन नामा लिखवा दिया.
(सुनन अजी दाउद : २, पेज नं. २५)
७. हुदैबिया में सुलह नामा लिखवाया गया.
(बुजारी : जिल्द १, पेज नं. ३७२)
८. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अली रज़ियल्लाहु अन्हु को
अक रिसाला लिखवा कर दिया जिस में मदीना का हरम होना,
मसायले जराहात, उंटो की उम्र, ज़मीनों के अहकाम, अल्लाह के
अलावा के नाम पर शिर्क करने की हुरमत, ज़मीन की चोरी पर
लानत, वालिदैन को बुरा कहने पर लानत, बिद्अती को पनाह देने
पर लानत वगैरा के मसायल थे.
९. अली रज़ियल्लाहु अन्हु इरमाते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु
अलयहि व सल्लमसे कुरआन मज्जद लिखा है और इस सहीइया यानी
हदीस के इस रिसाले को. (बुजारी)
१०. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु
अलयहि व सल्लम ने किताबुस्सदक़ा लिखवाय, फिर आपका
इन्तकाल हो गया. यह किताब हाकिमों के पास भेजा न जा सकी कि
आप के बाद अबूबक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस पर अमल किया. फिर
अबूबक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के इन्तकालके बाद उमर रज़ियल्लाहु
अन्हु ने उस पर अमल किया. यह किताब उमर के जानदान में
महकूज़ रही. उमर के पोते सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह किताब
इमाम जुहरी रहमहुल्लाह को पढ़ने के लिये दी जिसे इमाम जुहरी
रहमहुल्लाह ने याद कर लिया. उसकी नक़ल ज़लीज़ा उमर बिन
अब्दुल अज़ीज़ ने कराई. (अबु दाउद, बेहकी, मुस्तदरक़ हाकिम : जिल्द
१, पेज नं. २८२)
११. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने अपने आपरी ज़माने में
हदीस की अक़ बडी किताब जिस में कुरआन की तिलावत, नमाज़,
रोज़ा, ज़कात, तलाक़, इत्ताक़ (मुसलमानों को आज़ाद कराना),
किसास, दियत और दूसरे इरायज़, सुनन और बडे गुनाहों की
तइसील लिखवा कर अम्र बिन हज़म रज़ियल्लाहु अन्हु नामी सहाबी

કે ઝરિએ ચમનવાલોં કે પાસ ભિજવાઈ થી. (દાર કુત્ની, દારમી, બેહકી, મુસ્નદ અહમદ, ઇબ્ન ખુઝેમા, ઇબ્ન હિબ્બાન, મુપત્તા ઇમામ માલિક, સુનન નસાઈ)

સારે મસાઈલ કે ઇકઢા હોને કે લિહાઝ સે ઇસ કિતાબ કો હદીસ કી પહલી કિતાબ કહના ચાહિએ જો મુહમ્મદ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ ને ખુદ હી લિખવાઈ હૈ. ઇસી તરહ અરબ કે સરદારોં ઓર ગેર અરબ કે બાદશાહોં કો ઇસ્લામ કી દાવત કે ખત ભેજે થે.

૧૨. બાદશાહ હિરકલ ને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કા વહ ખત મંગવાયા જો આપ ને દહિચ્યા કલ્બી કો સન ૬ હિજરી મેં દે કર બસરા કે હાકિમ કે પાસ ભેજા થા. ઉસને વહ હીરકલ કે પાસ ભિજવાયા. (બુખારી : જિલ્દ ૧, પેજ નં. ૪)

૧૩. મુઆઝ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ કે બેટે કા ઇન્તકાલ જબ મદીના મુનવ્વરા મેં હુઆ, તબ મુઆઝ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ ચમન મેં થે, ઉન્હેં બડા ગમ ઓર અફ્સોસ હુઆ, તો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ ને મુઆઝ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ કે પાસ તાઝિયતી ખત લિખવાકર ભેજ દિયા. (મુસ્તદરક હાકિમ, તારીખે ખતીબ : જિલ્દ ૩, પેજ નં. ૮૯)

૧૪. અબૂ હુરૈરા રઝિયલ્લાહુ અન્હુ રિવાયત કરતે હૈ કિ સહાબા કિરામ રઝિયલ્લાહુ અન્હુમ મેં મુઝ સે જ્યાદા હદીસે રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કો રિવાયત કરનેવાલા કોઈ નહીં હૈ, મગર અબ્દુલ્લાહ બિન ઉમર રઝિયલ્લાહુ અન્હુ ઇસ સે અલગ હૈ. ઇસલિએ કિ વહ હદીસોં કો લિખા કરતે થે ઓર મેં લિખતા નહીં થા, સિફ જુબાની ચાદ કર લિયા કરતા થા. (બુખારી, તિર્મિઝી) અબૂ હુરૈરા રઝિયલ્લાહુ અન્હુ ૫૩૭૬ હદીસોં કે હાફિઝ થે.

૧૫. બશીર બિન નહીક રહમહુલ્લાહ જો એક તાબઈ હૈં રિવાયત કરતે હૈં કિ મેં અબૂ હુરૈરા રઝિયલ્લાહુ અન્હુ સે હદીસે સુનતા થા તો લિખ લિયા કરતા થા. ફિર જબ મેંને ઉનકે યહાં સે જાને કા ઇરાદા કિયા તો વહ કિતાબ લેકર ઉનકી ખિદમત મેં હાઝિર હુઆ ઓર પઢ કર સુનાયા, ફિર ઉનસે પૂછા કિ યહ સબ વહી હદીસેં હૈં જો મેંને આપ સે સુની હૈં?

- (उन्होंने) कहा हां. (सुनन दारमी)
१५. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने आपरी बीमारी में कुछ ऋरी अहकाम जैसे अरब की ऋमीन से मुशिरकीन ओर यहूदीयों को निकालना, पुकुद (जमातों) की जातिरदारी, तजहीऊ, उसामा रऊियल्लाहु अन्हु के लशकर की तैयारी करना, नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की कब्र को सजदागाह न बनाना ओर अबूबक रऊियल्लाहु अन्हु की जिलाइत वगैराह के अहकाम लिखवाने के लिअे कलम, दवात ओर कागऊ मंगवाया. (जुजारी : जिल्द नं. १, पेज नं. ४४८, मुस्लिम : जिल्द नं. २, पेज नं. ४२)
- नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इस किरम के मत बहुत हैं. जात लम्बी हो जायेगी इस दर से मुप्तसर तौर पर पेश किया गया है. इन सारी बातों से साइ नऊर आता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अपनी क्खिण्टगी ही में अपनी हदीसों को जास अहतैमाम से ऋरत के मुताबिक लिखवाया करते थे. बेशुमार सहाबा ने इन हदीसों को जमा किया ओर उनकी हिइऊत की. इसकी ओर ऊ्यादा जानकारी इस तरह है.
१७. अक सहीइा “सादिका” के नाम से मशहूर है, जिसे अब्ब इब्नुल आस रऊियल्लाहु अन्हु ने तैयार किया था. इस में हऊार से कुछ कम हदीसों हैं जो मुस्नद अहमद में मौजूद हैं.
१८. अक सहीइा “सहीहा” के नाम से मशहूर है जिसे हम्माम बिन मुनब्बह जो अबू हुरैरह रऊियल्लाहु अन्हु के शागिर्द है, उन्होंने तैयार किया है. उसकी हदीसों ली मुस्नद अहमद में मौजूद हैं. ओर इमाम जुजारी ओर मुस्लिम ने ली अपनी क्खिताबों में शामिल की हैं. इसका लिखा हुआ नुस्खा अब तक टिमशक ओर बरलीन की लाइब्ररियों में महकूऊ है.
१९. अक सहीइा “मुस्नद अबू हुरैरह” के नाम से याद किया जाता है. इसमें अबू हुरैरा रऊियल्लाहु अन्हु से रिवायत की हुइ सारी हदीसों मौजूद हैं ओर इसका लिखा हुआ नुस्खा जर्मनी की लाइब्ररी में मौजूद है.

२०. એક સહીફા, અલી રઝિયલ્લાહુ અન્હુ કે નામ સે મશહૂર હૈ.
२१. આપ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કે આખરી હઝ કે ખુલ્લે કો ખુદ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કે હુકમ સે લિખા ગયા થા.
२२. એક સહીફા, જાબિર બિન અબ્દુલ્લાહ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ કે નામ સે મશહૂર હૈ, જિસે ઉનકે દો શાગિર્દ વહબ બિન મુનબ્બા ઓર સલમાન બિન કેસ લશ્કરી ને તૈયાર કિયા થા.
२૩. સહીફા આઈશા રઝિયલ્લાહુ અન્હા, જિસે અમ્મ બિન જુબૈર ને તૈયાર કિયા થા.
२૪. એક સહીફા અબ્દુલ્લાહ બિન અબ્બાસ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ કે નામ સે મશહૂર હૈ. ઈસ સિલસિલે મેં સઈદ બિન હિલાલ રિવાયત કરતે હૈં કિ અનસ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ ને અપના સહીફા હમેં દિખલાયા ઓર કહા કિ યહ હદીસેં મેંને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ સે સુની ઓર લિખ લી. ફિર મેંને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કો દિખાઈ ઓર આપ ને ઉનકી તસ્દીક ભી કી. (તફ્સીલાત કે લિએ દેખેં ઈકબાલ કીલાની કી કિતાબ ઈતિબા-એ-સુન્નત કે મસાઈલ)

દ્વસરી ઓર તીસરી સદી

ચારોં ઈમામોં કી પૈદાઈશ

નામ	પૈદાઈશ	વફાત	ઉમ્મ	સાકિન	તસ્નીફ
ઈમામ અબૂ હનીફા રહ.	૮૦ હિ.	૧૫૦ હિ.	૭૦ સાલ	કૂફા	---
ઈમામ માલિક રહ.	૯૩ હિ.	૧૭૯ હિ.	૬૮ સાલ	મદીના	મુપતા માલિક
ઈમામ શાફઈ રહ.	૧૫૦ હિ.	૨૦૩ હિ.	૫૪ સાલ	મિસ્ર/બગદાદ	મુસ્નદ શાફઈ
ઈમામ અહમદ બિન હમ્બલ રહ.	૧૬૪ હિ.	૨૪૧ હિ.	૭૭ સાલ	દિમશ્ક	મુસ્નદ અહમદ

दूसरी सदी हिजरी से चारो एमामों का दौर शुरू हुआ. हमारे नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से तरबियत पानेवाले सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम एस दुनिया से चले गये. आखे दिन पेश आनेवाले मसाएल का जवाब देने के लिये सहाबा मौजूद न थे. यही वह दौर है जहां से मुसलमानों की आज़माएश शुरू हुई.

अब यही चारों एमाम अपने अपने एलाको में आम लोगों के लिये कामयाबी और हिदायत के लिये रहबर बने हुये थे. इन लोगों के पास कोय मस्अला आता तो कुरआन और हदीस पेश करते या अपनी राखे और कियास से काम लेते, और अल्लाह से डरते हुये यह ऐलान करते कि सहीह हदीस ही मेरा मज़हब है.

१. एमाम अबु हनीफ़ा रहमहुल्लाह ने कूफ़ा में ख़िन्दगी गुज़ारी, जहां के सियासी हालात बहुत खराब थे. कूफ़ा ही वह जगह है जहां हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का क़त्ल हुआ, शीओ का मस्क़ था. यहां एमाम साहब को बहुत कम हदीसों हासिल हुई जिसकी वजह से ज्यादातर मसाएल वे राखे और कियास से हल करते थे और साथ ही यह हिदायत दीया करते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हदीस के सामने मेरी बात रद कर दो.
२. एमाम मालिक रहमहुल्लाह ने मदीना मुनव्वरा में ख़िन्दगी गुज़ारकर नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ख़्यादा से ख़्यादा हदीसों को जमा किया और अपनी किताब का नाम “मुवत्ता” रखा जिसकी वजह से मसाएल में उनकी राखे बहुत कम मिलती है.
३. एमाम शाइफ़ रहमहुल्लाह का पहला दौर बसरा में और दूसरा दौर मिस्र में गुज़रा. उन्होंने भी नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की ख़्यादा से ख़्यादा हदीसों को अपनी किताब में जमा किया और उसका नाम “मुस्नद शाइफ़” रखा.
४. एमाम अहमद बिन हम्बल भी हदीसों को जमा करने में मशगूल रहे. नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हदीसों का बहुत बड़ा हिस्सा उनके हाथ आया, उन्होंने अपनी किताब का नाम “मुस्नद अहमद” रखा. एमाम अहमद रहमहुल्लाह के सारे मसाएल राखे व

કિયાસ સે દૂર છે.

ઇસ તરહ ચારો ઇમામોં કા ઝમાના ભી તકવા કે લિહાઝ સે કુર્આન ઓર હદીસ સે મસાઇલ હલ કરને કા થા. અગર કિસી ઇમામ કી તરફ સે કોઇ રાએ કાઇમ હોતી તો વહ વકતી રહતી, હદીસે રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કે મિલતે હી ખત્મ હો જાતી.

ચારો ઇમામોં કે અકવાલ

અલ્લાહ તઆલા રહમતે નાઝિલ ફરમાએ સભી ઇમામોં પર કિ ઉન્હોં ને કિતની હક બાતે કહીં છે.

ઇમામ અબૂ હનીફા (નોઅ્માન બિન સાબિત) રહમહુલ્લાહ કે અકવાલ ઇમામ અબૂ હનીફા રહમહુલ્લાહ કહતે છે:

૧. મેરે કોલ પર ફતવા દેના હરામ છે જબ તક કિ મેરી બાત કી દલીલ માલૂમ ન હો. (મીઝાન લિશ્ શઅરાની, ઇકદુલ જુદ પેજ નં. ૭૦)
 ૨. જબ મેરા કોલ કુર્આન કે ખિલાફ હો, તો ઉસે છોડ દો. લોગોં ને પૂછા જબ આપ કા કોલ હદીસ કે ખિલાફ હો? ફરમાયા ઉસ વકત ભી છોડ દો. ફિર પૂછા જબ સહાબા કિરામ રઝિયલ્લાહુ અન્હુમ કે ફરમાન કે ખિલાફ હો તો? કહા તબ ભી છોડ દો. (ઇકદુલ જુદ, પેજ નં. ૫૩)
 ૩. જબ દેખો કિ હમારે કોલ કુર્આન ઓર હદીસ કે ખિલાફ છે તો કુર્આન ઓર હદીસ પર અમલ કરો ઓર હમારે અકવાલ કો દીવાર પર દે મારો. (મીઝાન લિશ્ શઅરાની, ઇકદુલ જુદ પેજ નં. ૫૩)
 ૪. અબૂ હનીફા રહમહુલ્લાહ કા ચહ કોલ સોને કે પાની સે લિખને કે લાઇક છે, વે ફરમાતે છે : સહીહ હદીસ હી મેરા મઝહબ છે. (ઇકદુલ જુદ). જો હદીસ સે સાબિત હો વહ સર આંખોં પર છે. (ઝફરૂલ અમાની)
 ૫. મેરી તકલીદ ન કરના ઓર ન માલિક કી, ઓર ન કિસી ઓર કી તકલીદ કરના. અહકામે દીન વહાં સે લેના જહાં સે ઉન્હોંને લિએ છે, યાની કુર્આન ઓર હદીસ સે. (તોહફતુલ અઝ્યા ફી બયાનિલ અબરા)
- ઇમામ સહાબ કી ઇન બાતોં સે ચહ દિન કે ઉજાલે કી તરફ સાફ

ઝાહિર હોતા હૈ કિ ઇમામ અબૂ હનીફા રહમહુલ્લાહ કા અકીદા ઓર મઝહબ કુર્આન ઓર હદીસ હૈ, જો મસ્અલા સહીહ હદીસ સે સાબિત હો વહ કાબિલે અમલ હૈ. ઇસકે અલાવા ફરમાયા કિ મેરી તકલીદ ન કરના ઓર ન હી બગેર દલીલ કે મેરી બાતો કો માનના, સિર્ફ કુર્આન ઓર હદીસ પર અમલ કરના. ઇમામ મોસૂફ ને કિતની હક બાત કહી હૈ. અલ્લાહ તઆલા ઉનકી કબ્ર કો નૂર સે ભર દે, આમીન.

અકવાલે ઇમામ માલિક બિન અનસ રહમહુલ્લાહ ઇમામ માલિક રહમહુલ્લાહ ફરમાતે હૈ :

૧. દુનિયા મેં કોઇ શખ્સ એસા નહીં હૈ કિ જિસ કી કુછ બાતે દુરૂસ્ત ઓર કુછ ગલત ન હોં. તો ઉસકી દુરૂસ્ત બાતે લે લી જાતી હૈ ઓર ગલત છોડ દી જાતી હૈ સિવાએ મુહમ્મદ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કે. કયુંકિ ઇનકી તમામ બાતે સહીહ ઓર દુરૂસ્ત હૈ ઓર માન હી લેને કે લાએક હૈ. (ઇકદુલ જુદ પેજ નં. ૭૦) આપ કી સારી ઝિન્દગી કી એક બાત ભી છોડને કે કાબિલ નહીં.
૨. મેં સિર્ફ એક ઇન્સાન હૂં. કભી મેરી બાત દુરૂસ્ત હોતી હૈ ઓર કભી ગલત, તો તુમ મેરી ઉસ બાત કો જો કુર્આન ઓર હદીસ કે મુતાબિક હો, લે લિયા કરો ઓર ઉસ બાત કો જો ઉસકે ખિલાફ હો છોડ દિયા કરો. (જલબુલ મન્ફઅત પેજ નં. ૭૪)
(યાની મેરી અંધી તકલીદ મત કરો)
૩. પસ તુમ મેરી રાએ કો પૂરે ધ્યાન સે પઢો. અગર વહ કુર્આન ઓર સુન્નત કે મુવાફિક હો તો કુબૂલ કરો ઓર જબ ખિલાફ પાઓ છોડ દો.

ઇમામ શાફઈ (મુહમ્મદ બિન ઇબ્રીસ) રહમહુલ્લાહ કે અકવાલ. ઇમામ શાફઈ રહમહુલ્લાહ ને ફરમાયા :

૧. જબ મેં કોઇ મસ્અલા કહૂં ઓર રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ ને મેરે કોલ કે ખિલાફ કહા હો તો જો મસ્અલા હદીસ સે સાબિત હો વહી સબ સે બેહતર હૈ, પસ મેરી તકલીદ મત કરો.
(ઇકદુલ જુદ પેજ નં. ૫૪)
૨. જબ સહીહ હદીસ મિલ જાએ (તો જાન લો કિ) મેરા મઝહબ વહી હૈ.

और मेरी बात को हदीस के जिलाइ देजो तो (जबरदार) हदीस पर
अमल करो और मेरी बात दीवार पर दे मारो. (ईकदुल ज़ुद ७०)

3. ईमाम शाइफ़ रहमतुल्लाह ने अपनी तकलीह और दूसरे की तकलीह
से मना किया है. (ईकदुल ज़ुद)

ईमाम अहमद बिन हम्बल रहमहुल्लाह के अक़वाल :

१. हरगिज़ न मेरी तकलीह करना और न मालिक की ओर न शाइफ़ की
ओर न ओज़ाई की ओर न सौरी की. यह सारे ईमाम जहां से दीन के
अहक़ाम और मसाइल लेते थे तुम भी वहीं से लेना (यानी कुरआन
और हदीस से ही लेना). (ईकदुल ज़ुद पेज नं. ७०)

२. किसी को अल्लाह और उसके रसूल के साथ कलाम की गुंजाईश नहीं
है. (ईकदुल ज़ुद)

ईन चारों ईमामों के अक़वाल से यह बात साइ दिजाई देती है कि
ईन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की हदीस के मुताबिक़ :
“जिस पर मैं और मेरे सहाबा है”, रास्ता ईज्तिहार करके कुरआन व हदीस
पर अमल किया और यही उनका मज़हब था. ईन चारों बुख़ुर्गो ने अपनी
तकलीह से मना किया और किसी ने भी अलग मज़हब अपने नाम से शुर्इ
नहीं किया. नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया, “सब से
बेहतरीन लोग मेरे ज़माने के है, फिर वह जो उनके बादवाले हैं, फिर वह जो
उनके बादवाले हैं.” अपने ज़माने के बाद दो ज़मानों का ठिक़ किया.
(बुजारी)

अल्लामा ईब्ने हज़र रहमहुल्लाह इह्लुल बारी पारा १४, बाब
इज़ाईले असहाबिन्नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम में लिखते हुअे
इरमाते हैं तजा ताबईन २२० बरस तक ठिन्दा रहे. उनके ज़माने में भी किसी
जास शप्स की तकलीह और जास शप्स का मज़हब किसी का न था. चारों
ईमामों के शार्गिहो ने अपने अपने ईमामों से कुछ मसाइल में ईज्तिलाइ किया
है, ईसलिअे कि वे मुक़ल्लिह न थे.

अल्लामा सन्द बिन अतान रहमहुल्लाह लिखते हैं कि सहाबा के
ज़माने में किसी जास शप्स के नाम का मज़हब न था जिस की तकलीह की
जाती हो. बहर हाल तीन सदियों में तकलीह का पजूह न था.

हदीस की किताबों की और तस्वील

मुहद्दिंस का नाम	पैदाईश	पश्त	उम्र	साकिन	किताब
अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्हमान बिन इब्न रह.	१८० हि.	२५५ हि.	७४ साल	समरकन्द	सुनन दारमी
अबू अब्दुल्लाह बिन इस्माईल बुजारी रह.	१८४ हि.	२५५ हि.	५२ साल	बुजारा	सहीह बुजारी
अबू दाउद सुलेमान बिन अशअस रह.	२०२ हि.	२७५ हि.	७३ साल	जसरा	सुनन अबू दाउद
अबूलहसन मुस्लिम बिन अलहज्जज रह.	२०४ हि.	२५१ हि.	५७ साल	नीशापूर	सहीह मुस्लिम
अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सौरा तिरमिज़ी रह.	२०८ हि.	२७८ हि.	७० साल	पुरासान तिरमिज़	जामेअ तिरमिज़ी
अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा रब्थ रह.	२०८ हि.	२७३ हि.	५४ साल	ईराक	सुनन इब्ने माजा
अबू अब्दुर्हमान बिन अहमद बिन शुअैब रह.	२१५ हि.	३०३ हि.	८८ साल	क़ज़वीन पुरासान	सुनन नसाई
अबू हसन बिन अली बिन उमर रह.	३०५ हि.	३८५ हि.	८० साल	जगदाद	दार कुत्नी
अबू जक अहमद बिन हुसैन रह.	३८४ हि.	४५८ हि.	७४ साल	बेहकी नीशापूर	बेहकी
शेख वलीयुद्दिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह जतीब	४३५ हि.	५१५ हि.	८१ साल	मर्व तबरेज़	मिशक़ात

यहां हदीस की सिई मशहूर किताबें ही ठिक की गइ है, परना इनके अलावा कई हदीस की किताबें लिखी गइ हैं.

शेख अब्दुल कादिर जलानी रहमहुल्लाह के अक़वाल

शेख अब्दुल कादिर जलानी रहमहुल्लाह की पैदाईश सन ४७० हिजरी और पश्त सन ५५१ हिजरी, उम्र ८१ साल, जगदाद मे रहते थे,

गुनियतुत् तालिबीन, कुतूहलगैब, इत्हे रब्बानी यह एनकी लिफा हुए किताबे हें.

शेख अब्दुल कादिर जलानी ने अपनी किताब कुतूहलगैब में कितनी खबरदस्त नसीहत और हिदायत इरमाए है, ऊरा गौर कीजिये:

“कुरआन और हदीस को अपना एमाम बना लो और गौर व इफ्क के साथ उनका मुताला कर लिया करो, एधर एधर की बहस व तकरार और हिर्स व हवस की बातों में न इंस जाओ. सिई अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत पर अमल करो. और यह हकीकत समझ लो कि कुरआन के अलावा हमारे पास अमल के काबिल कोए किताब नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सिवा हमारा कोए रहबर नहीं, जिसकी हम ताबेदारी करें. कभी कुरआन और हदीस के दाअरे से बाहर न हो जाना परना ज्वाहिशे नइसानी और शैतानी वसवसे तुम्हें सीधे रास्ते से भटका देंगे. याद रजो एन्सान ओलिया अल्लाह के दर्जे पर भी किताबुल्लाह व सुन्नते रसूल पर अमल करने से ही पहुंच सकता है” (कुतूहल गैब)

तकलीए शप्सी की तारीफ

१. तकलीए करनेवालों की दलील उसके मुजतहिद (एमाम) का कौल होता है, न वह भूद तहकीक कर सकता है और न ही अपने एमाम की तहकीक पर गौर कर सकता है. (मुस्लिमुस् सुबूत मुजतबाए)
२. तकलीए कहते हैं गैर नबी (यानी एमाम व मुजतहिद) के कौल को जगैर उसकी दलील जाने, मान लेना. (जम्उल ज्वामिअ)
३. मुल्ला अली कारी हनफी रहमहुल्लाह इरमाते हैं: गैर नबी (एमाम) के कौल को जगैर दलील मानना तकलीए है. (शह कसीदा एमाली)
४. मुकत्लिद की दलील सिई उसके एमाम का कौल ही है, मुकत्लिद सिई यही कहे कि मस्अले का हुकम यही है क्यूं कि मेरे एमाम की राअे यही है और जो राअे मेरे एमाम की हो मेरे नखटीक सहीह है.
(तोळीह तलपीह)
५. एमाम का कौल मुकत्लिद की दलील है. (तोळीह)
६. सिई एमाम के कौल पर अमल किया जाअे और उसी कौल के हिसाब से इतपा दिया जाअे. (दुर्रे मुफ्तार, जिल्द नं. १)

तकलीद का मतलब यह है कि मुकदिलद जिस धमाम की तकलीद कर रहा है वह सिर्फ उस धमाम के कौल पर ही चले, तहकीक करना या दलील याहना तकलीद को जत्म कर देता है. दूसरे लइकों में तकलीद की तारीक बयान की जाये तो वह यह होगी कि नबी के अलावा किसी और शज्स की बातों को बगैर दलील के (यानी बगैर कुरआन और हदीस के), शरध हैसियत से मान लेना और अमल करना तकलीद कहलाती है.

चौथी सदी

तकलीदे शजसी की शुइआत चौथी सदी में हुध. (धअलामुल मुपकिकधन जिल्द १, पेज नं. २२२) तज्किरतुल हुइइअज पेज नं. २०२ में है कि रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के उमाने से ले कर आनेवाले बाद के दोनो उमानों तक तकलीद का वजूद ही न था, जेइल कुइन के बाद तकलीद का वजूद पाया जाता है. चौथी सदी से छठी सदी तक धसी तरह तकलीद का सिलसिला रहा.

आधये अब देजते है इकह की किताबों की शुइआत कब से हुध.

क्रम	किताब का नाम	तरनीइ	क्रम	किताब का नाम	तरनीइ
१	कुदूरी (इकह की पहली किताब)	४२८ हि	१५	जुलास-अ-कीदानी	नव्वी सदी
२	हिदाया (इकह की किताब)	५८३ हि	१६	हुलिया	नव्वी सदी
३	इतावा काजु जां	छठी सदी	१७	बहइर राधक	दसवीं सदी
४	इतावा अल वाहिया	छठी सदी	१८	गुनियह	दसवीं सदी
५	मुनिय्यतुल मुसल्ली	सातवीं सदी	१९	तनवीइल अबसार	दसवीं सदी
६	कनियह	सातवीं सदी	२०	उमीरतुल उकबा	दसवीं सदी
७	कनजुद् दकाधक	७१० हि.	२१	दुई मुज्तार	१०११ हि.
८	शरह वकाया	७४५ हि.	२२	इतावा जेरिय्या	गियारहवीं सदी

૯	નિહાયા	આઠવીં સદી	૨૩	ફતાવા આલમગીરી	૧૧૧૮ હિ.
૧૦	ઇનાયા	આઠવીં સદી	૨૪	મા લા બુદ્દા મિન્હુ	૧૨૨૫ હિ.
૧૧	તહાવી	આઠવીં સદી	૨૫	બહિશ્તી ઝેવર	૧૨૨૫ હિ.
૧૨	જામિઉર્ રૂમૂઝ	આઠવીં સદી	૨૬	મરાકિઉલ ફલાહ	તેરહવીં સદી
૧૩	ફત્હુલ કદીર	નવવી સદી	૨૭	ઉમદતુર રિઆયા	તેરહવીં સદી
૧૪	બઝાઝિચ્યહ	નવવી સદી			

ઉપર ઝિક્ક કી ગઇ ફિક્ક કી મશહૂર કિતાબોં કે અલાવા ભી ફિક્ક કી કઇ કિતાબોં લિખી ગઇ હૈ. લેકિન બાત લમ્બી હો જાએગી ઇસ ડર સે ઉન્હેં ઇસમેં શામિલ નહીં કિયા ગયા.

સાતવીં સદી

સાતવીં સદી હિજરી મેં પહલી બાર ઇન ચાર ઇમામોં કે નામ પર બને મસલક કે કાઝી મુકરર કિએ ગએ ઓર ઘીરે ઘીરે તકલીદ કરનેવાલોં કી તાદાદ બડતી ગઇ ઓર બાદશાહોં કા રૂજ્હાન ભી તકલીદ હી કી તરફ હોતા ગયા. હર એક બાદશાહ અપને ખિયાલ કા કાઝી મુકરર કરતા ગયા ઓર હર એક ફિરકા અપને અપને મઝહબ કો બઢાતા ગયા. યહાં તક કિ એક દૂસરે કો નીચા ઓર કમઝોર કરને કી કોશીશોં કરને લગે. આખિર કાર બેબરસ ને સન ૬૬૫ હિજરી મેં મિસ્ત્ર ઓર કાહિરા મેં ચાર મઝહબ કે ચાર કાઝી હનફી, માલિકી, શાફી ઓર હમ્બલી મુકરર કિએ. યહી દસ્તૂર જરી હો ગયા ઓર સરકારી તોર પર ચારોં મઝહબ કો બરહક માન લિઆ ગયા. ઇસ તરહ બાદશાહોં કી મદદ સે યહ નએ પેદા હોનેવાલે મઝહબ ઇસ્લામ મેં દાખિલ કિએ ગએ.

દીને હક રા ચાર મઝાહિબ સાખતન્દ

રૂખના દર દીને નબી અનદાખતન્દ

એક દીને ઇસ્લામ કે ચાર ટુકડે કર દિએ ગએ, યહ નિસ્બતે અઇમ્મા નિસ્બતે મઝહબ સાતવીં સદી સે શુરૂ હુઇ. ઇસ તરહ આઠવીં સદી ભી ઇસી હાલ મેં ગુઝરી.

નવીં સદી

ચાર મુસલ્લે બેતુલ્લાહ શરીફ મેં (ઇમામોં કે નામ પર કાઇમ કર દિએ

गये. यहां तक की नवीं सदी के शुरू में यराकिया के सुल्तान इरह बिन बरकूक ने बैलुल्लाह शरीफ के धहाते में मुसल्ला-अ-एब्बाहीमी के अलावा यह नये एजाद होनेवाले चार मुसल्ले हनई, मालिकी, शाइफ, हम्बली के नाम पर कायेम कर दिये. इसके बाद एन चारों मुसल्लों का मुआमला इस्लाम का हिस्सा समझा जाने लगा. अल्लामा शौकानी कहते हैं कि उस जमाने में अहले इल्म ने इसकी सप्त मुजालिफत की (अल-इरशाद पेज नम्बर ५८). यह नये बने चारों मुसल्ले नवीं सदी से तेरहवीं सदी तक बराबर कायम रहे.

चौदहवीं सदी

इमामों के नाम पर बने वह चारों मुसल्ले जल्म कर दिये गये.

एन मुसल्लों को सउदी हुकूमत के बानी शाह अब्दुल अजीज ने सन १३४३ हिजरी में जल्म कर के सिई अक मुसल्ला, मुसल्ला इब्बाहीमी को जो इस्लाम के शुरू ही से था, उसे पहले जैसा बरकरार रखा जो अब तक मौजूद है और इसी मुसल्ले से ही तमाम नमाजें अदा होती हैं.

हमने बुनियादी तौर पर सालों की तइसील के साथ हर तरह से लोगों को बता दिया है. इस सच्यी बात को जान लेने के बाद इन्साइ की बात तो यह है कि कुरआन और हदीस पर अमल करने को लाजिम पकड़ें, क्युंकि आभीरत की कामियाबी का दारोमदार इसी पर टिका हुआ है. इन्दगी के हर मामले में अल्लाह का हुकम क्या है और नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का हुकम क्या है और अमल क्या है? इसका जयाल रण कर अमल करें और इसी तरह का अमल जन्नत की तरफ ले जाता है, आभिरकार अक दिन जन्नत में दाखिल हो जाओगे.

तो फिर अमल का तरीका क्या हो?

अल्लाह रब्बुल आलमीन इरमाता है: अल्लाह के रसूल की इन्दगी तुम्हारे लिये अक बेहतरीन और मुकम्मल नमूना है. (सूरतुल अहजाब : ३३, २१)

इस शर्त के साथ कि अल्लाह तआला और कियामत के दिन पर इमान हो.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कि इत्तिबा करने की कुरआने करीम में बार बार ताकीद आइ है.

जिसने रसूल की ईताअत की हकीकत में उसने अल्लाह की ईताअत की. (सूरतुन निसा : ४, ८०)

ईस बेहतरीन आयत से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी इरमांबरदारी को अल्लाह तआला ने अपनी इरमांबरदारी कह कर हमारी इन्दगी की रहनुमाई इरमाई है. यह अल्लाह का बहुत बडा अहसान है कि ईस अहसान का हम जिस कद्र शुक्र अदा करें कम है.

कसम हे तेरे रब की (ऐ मुहम्मद!) यह लोग उस पकत तक हरगिज ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के ऋगडों में आप को हकम न बना लें. फिर जब आप कैसेला दें दें तो उस से नाराज ना हों, बल्कि पूरे तौर पर उसे मान लें. (सूरतुन निसा : ४, ५५)

ऐ ईमानवालों ! ईस्लाम में पूरे के पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान की पैरवी मत करो, क्यूंकि वह तुम्हारा भुला दुश्मन है.

(सूरतुल बकरा : २, २०८)

अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी ईत्तबा करो, अल्लाह भी तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा. अल्लाह बख्शनेवाला बडा मेहरबान है. (सूरह आले ईमरान : ३, ३१)

ऐ ईमानवालों, इरमांबरदारी करो अल्लाह तआला की और इरमांबरदारी करो उसके रसूल की और तुम में से ईहितयार रखनेवालों की, फिर अगर किसी चीज में तुम में ईहितलाफ़ हो जाये तो उसे लौटाओ अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ अगर तुम्हें अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर ईमान है. (सूरतुन निसा : ४, ५८)

अल्लाह की और उसके रसूल की इरमांबरदारी करो और आपस में ईहितलाफ़ ना करना परना तुम बुख़्दल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उभड जायेगी. (सूरतुल अन्फ़ाल : ८, ४५)

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह की ईताअत करो और उसके रसूल का कहा मानो और (ईनसे मूंह मोडकर) अपने आमाल को बरबाद न करो.

(सूरह मुहम्मद : ४७, ३३)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इरमान (हदीसों)

१. तुम से कोई शख्स उस पकत तक ईमानवाला नहीं हो सकता जब तक

- में उसके नज़्दीक उसके मां-बाप और ओलाह और सारे लोगों से
 ज्यादा महबूब न हो जाऊँ. (बुजारी : जि. १, किताबुल इमान)
२. जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की गोया उसने मुझ से मुहब्बत की
 और जिसने मुझ से मुहब्बत की वह मेरे साथ जन्नत में होगा.
 (तिरमिज़ी : मिश्कात, पेज नं. ५५)
३. जो मेरी सुन्नत से मुंह डेरेगा वह मुझ से नहीं (यानी मेरी उम्मत में
 उसका शुमार न होगा). (बुजारी व मुस्लिम)
 अगर तुम मेरी सुन्नत को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे बल्कि
 काफ़िर हो जाओगे.
४. मैं तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, जब तक तुम उन दोनों को
 मज़बूती से थामे रहोगे हरगिज़ गुमराह नहीं होंगे. वह (दो चीज़ें)
 अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नतें हैं. (मुयत्ता,
 मिश्कात पेज नं. ५८)
५. मेरी उम्मत के सारे लोग जन्नत में जायेंगे सिवाये उन लोगों के
 जिन्होंने इन्कार किया. सहाबा ने पूछा कि ये अल्लाह के रसूल
 इन्कार किस ने किया? आप ने इरमाया: जिस ने मेरी इत्ताअत की
 वह जन्नत में दाखिल होगा और जिस ने मेरी नाइरमानी की उसने
 इन्कार किया. (बुजारी)
- इसलिये कुरआन और हदीस पर अमल करने के सिवा कोई दूसरा
 रास्ता नहीं है. इन दलीलों से साफ़ जाहिर है कि मुसलमान की शुद्धता और
 उसका जातमा यही कुरआन और हदीस है.

हमारा पतन जन्नत है

हमारा असल पतन जन्नत है जो हमेशा हमेशा रहनेवाली और
 रहमत की जगह है. अल्लाह तआला ने आदम अलयहिस्सलाम को बनाकर
 उनके रहने की जगह जन्नत को करार दिया और आदम अलयहिस्सलाम की
 पीठ से उनकी ओलाह निकाली. (यानी कियामत तक पैदा होनेवाली इन्हें),
 और भुट उन्हीं को उनका गवाह बना दिया. जब अल्लाह तआलाने सवाल
 किया कि क्या मैं तुम्हारा परपरिश करनेवाला नहीं हूँ? तो सब ने जवाब दिया
 कि बेशक तू ही हमारा रब है.

और तमाम इरिशतों वगैरा को अल्लाह का हुकम हुआ कि आदम को सजदा करें. इस हुकम की इरमांजरदारी सभी इरिशतों ने की, सिर्फ शैतान ने नाइरमानी की. जिसकी वजह से वह लानती और अल्लाह के दरबार से बाहर हुआ और जन्नत से निकाला गया. शैतान शुरू से ही इंसान का जुला दुश्मन रहा है और उसी शैतान ने आदम अलयहिस्सलाम को अल्लाह के हुकम की जिलाइपरजी पर उकसाया था, जो आदम अलयहिस्सलाम से अल्लाह के हुकम की नाइरमानी हुई. इस बिना पर आदम अलयहिस्सलाम को उनके पैदाइशी पतन जन्नत से ङमीन पर उतारा गया. कुछ मुद्दत के बाद वह तोबा कर के अल्लाह तआला की इरमांजरदारी के साथ ङिन्दगी गुजारकर इस जत्म हो जानेवाली दुनिया से अपने पतन वापस चले गये. इस लिहाज से हमारा भी असल पतन जन्नत ही है.

मेरे प्यारे भाइयो ! हम आजरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के उम्मती हैं और अेक बेहतरीन उम्मत के लकजवाले हैं. जब हमारा असल पतन जन्नत है, तो क्या यह तमन्ना नहीं है कि हम अपने पतन जन्नत को वापस जायें?

जवाब सबका अेक ही होगा, यह कि बेशक हम अपने पतन जन्नत में जाने के ज्वाहिशमन्द हैं, तो मेरे भाइयो ! मैं यह कहूंगा कि अल्लाह के इरमान के मुताबिक, “ तुम लोग उसकी ताबेदारी करो जो तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब की ओर से उतारा गया है, उसके सिवा और दूसरे साथियों (मनघडत सरपरस्तों) की ताबेदारी में न लग जाना.

(सूरतुल अअ्राइ : ७, ३)

इस से यह बात जुलकर सामने आ जाती है कि हम कुरआन और हदीस पर अमल करके सीधा रास्ता तअे करते हुअे इस जत्म होनेवाली जगह से अपने अस्ली पतन जन्नत को वापस हो जायें.

इस आयत की रौशनी में किसी को यह हक हासिल नहीं होता कि कुरआन और हदीस को छोडकर किसी उम्मती की पैरवी करे. अगर कोय अैसी जिलाइपरजी करता है तो वह अपने अस्ली पतन जन्नत के रास्ते से लटक कर जहन्नम की तरफ चला जाता है. अल्लाह तआला के नाइरमानों और मुशिरकों का ठिकाना जहन्नम ही है जो हमेशा हमेशा के अजाब का मकाम है.

मेरे इस्लामी भाइयो ! संजुदगी से गौर व इिक करो कि पकती और जत्म हो जानेवाली दुनिया के पतन से इंसान को किस कर्र मुहब्बत होती है.

ईसका अन्दाज़ा उसी वक़्त होता है जबकि ईन्सान अपने वतन से दूर, दूसरे मक़ाम पर कई साल त्रिन्टगी गुज़ारने के बाद अपने वतन वापस आता है, तो उसको कितनी ढुशी होती है. हालांकि, यह ढुशी वक़ती और ज़तम होने वाली दुनिया के वतन की है.

ऐ अल्लाह के बन्दे ! हमेशा हमेशा की ढुशी का मक़ाम ज़न्नत है ईसके लिये अल्लाह और ईसके रसूल की इरमांजरदारी करते हुये ईस ज़तम होनेवाली दुनिया से अपने अस्ली वतन ज़न्नत की तरफ़ पलट आओ.

ज़न्नत की राह

- १ अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु इरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिये अेक (सीधी) लकीर ढींची, इर इरमाया : यह अल्लाह की राह है, इर आपने (सीधी) लकीर के दाअे बाअे अन्द (तिरछी) लकीरें ढींची और इरमाया : यह राहें हैं ईनमें से हर राह पर शैतान है, जो ढूँडारता है ईस राह की तरफ़. इर आपने कुरआन की यह आयत ढढी “अकीनन यह मेरा सीधा रास्ता है, सो ईसी की ढेरवी करो, ईसके अलावा किसी दूसरे रास्तों की ढेरवी न करो. (अहमद, नसाई, दारमी) वह नक़शा ईस तरह है.

शैतान की राहें



शैतान की राहें

अल्लाह का रास्ता

२. जबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वह कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके साथ ढेहे हुये थे कि आप ने अेक सीधी लकीर ढींची, इर दो लकीरें (तिरछी) ईसके दाअे और दो लकीरें (तिरछी) ईसके बाअे ढींची. इर दरमियानी (सीधी) लकीर पर हाथ रजकर इरमाया : यह अल्लाह की राह है. (बाकी राहें अल्लाह की नहीं) (ईब्ने माज़) वह नक़शा ईस तरह है.

शैतान की राहें



शैतान की राहें

अल्लाह का रास्ता

धन दोनों हदीसों और शकलों का मतलब अेक ही है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने दरमियानी सीधी लकीर को अल्लाह की राह कहा है. अल्लाह तआला कुरआन में इरमाता है : “रसूल की र्घताअत अल्लाह की र्घताअत है.” (निसा : ४, ८०)

धस आयत से अल्लाह की राह का पता हो रहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की पैरवी करना उनके नकशे कदम पर चलना अैसा है जैसे अल्लाह की राह पर चलना है. धसी तरह अल्लाह के रसूल के कौल और इअ्ल की राह कियामत तक राहे अमल है. धस से यह बात बिलकुल साइ ञाहिर है कि कुरआन और हदीस ही जन्नत की राह है और धसी पर अमल करके जन्नत में दाबिल हो जाअें.

धस्लामी भाधयो ! कुरआन व हदीस पर अमल हमारी ञिन्दगी का मकसद होना चाहिये. धसलिये ञिन्दगी की सभी मंञिलें कितान व सुन्नत के मुताबिक तअे करते हुअे आबिरी सांस छोडना ही कामियाबी की मंञिल है, वह मंञिल जन्नत है.

मस्लके सुन्नत पे अै सालिक चला जा बेधडक
जन्नतुल इरदौस को सीधी गध है यह सडक.

पैगामे र्घलाही

अै र्घमानवालो ! अपने आप को और अपने अहल व अयाल को जहन्नम की आग से बचाओ. (सूरतुत तहरीम : ५५, ५)

यानी रोञे कियामत उसके बारे में पूछा जाअेगा. धस नजात के लिये धस्लामी तालीम व तरबियत से अपने घरवालों को वाकिइ करा के अमल करनेवाला बनाने की कोशिश करें. यह जानदान के मुजीया की बहुत अहम ञिम्मेदारी है, हिदायत देना अल्लाह तआला के र्घञितयार में है.

पैगामे रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया : जाप अपनी ओलाद को जो कुछ देता है उस में सब से बेहतर अतिया उसकी अरछी तालीम व तरबियत है. (तिरमिञी, मिश्कात)

तशरीह : पालीटिन का बेहतरीन अतिया ओलाह की सहीह तालीम व तरबियत है. इस्लाम ने बच्चों की तालीम व तरबियत के सिलसिले में बहुत ही ताकीदी हुकम दिया है. इस हदीस के माना यह नहीं कि कोई अतिया ही न दिया जाये, जायेदाए पिरासत में न छोड़ी जाये. बल्कि अल्पसियत और सब से ज्यादा अहमियत तालीम व तरबियत को दी जाये.

अपने आमाल को बरबाद न करो

काफ़िरो और मुसलमानों के आमाल का जायेजा किया जाये तो मैं एक बात कह देना जरूरी समझता हूँ, वह यह कि आज़िमत का इन्कार करने वाला काफ़िर कितना भी नेक काम करे, उसको आज़िमत में सवाब नहीं मिलता, बल्कि दुनिया में कुछ नसीब हो जाता है. लेकिन आज़िमत का इन्कार करनेवाला मुसलमान अगर कुरआन और हदीस के मुताबिक अमल न करे, तो उसका कोई नेक काम चाहे कितना ही बेहतर हो, वह अल्लाह तआला के पास काबिले कबूल नहीं होता और न ही उसको जन्नत नसीब होती है.

मेरे प्यारे भाइयो ! अब भी पकत है, ङिन्दगी को गनीमत जानें और अपनी गलतियों का इन्कार करके अल्लाह तआला से मग्फ़िरत की दुआ करें. उसकी रहमत से ना उम्मीद न हो. वह तौबा कबूल करनेवाला और तौबा करनेवालों से बहुत प्यारा होता है. इसलिये तौबा व इस्तिग़्फ़ार करने में जल्दी करें, कहीं ऐसा न हो कि सूरज बजाये मशिक के मशिक की तरफ़ से निकल जाये और जब ऐसा होगा तो उस पकत तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा. यह बात पूज याद रखो कि वह दिन कियामत का होगा, जो अचानक पाके होगा. इसका इल्म किसी को नहीं है, उस दिन यहां जैसा करोगे वैसा पाओगे. छोटी से छोटी चीज़ का हिसाब होगा, और उसके मुताबिक जज़ा व सज़ा होगी.

यह दुनिया अमल करने की जगह है इसलिये बेहतरीन उम्मत का इरीज़ा यही है कि इस्लाम जालिस, अल्लाह के और उसके रसूल के पैगाम के ज़रीअे कियामत तक आम लोगों को भलाइ का हुकम देते रहें और बुराई से रोकते रहें. मेरी ङिम्मेदारी हक बात को पेश करना है, अब बाबगाहे रब्बुल इज़्ज़त में दुआ करता हूँ कि !

ऐ दिलों के ड़ेनेवाले तमाम मुसलमान भाइयो के दिलों को अपने पास देने इस्लाम पर अमल करने की तरफ़ भाईल कर दे और हिदायत नसीब ड़रमा. आमीन, सुम्मा आमीन.

हमारी दखलत ये है के !

- १) रसुले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने उम्मतको ज़ुस बात का हुक़म दीया है या ज़ुसे जुद कीया है या ज़ुसे करने की इजाज़त दी है उसे मिन व अन उसी तरह कीजुअे और ज़ुस बात से आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने मन्अ इरमाया है उस से इक ज़ाएअे. इश़ाटि बारी तआला है, “जो कुछ रसुल तुम्हे दे वो ले लो और ज़ुस चीज़ से मन्अ करे उस से इक ज़ाओ.” (सूर: हशर, आ. नं. ७)
- २) रसुले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने दीनके मआमले मे जो काम सारी हयाते तैयीबा मे नहीं कीया वो काम अपनी मरज़ी से करके अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से आगे बढने की ज़सारत ना कीजुअे. इश़ाटि बारी तआला है, “अे लोगो ! जो इमान लाअे हो ! अल्लाह और उसके रसुल से आगे न बढो.” (सूर: हुजुरात, आ. नं. १)
- ३) रसुले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की इताअत और इत्तीबा के मुक़ाबले मे कीसी दुसरे की इताअत और इत्तीबा करके अपने अअ्माल बरबाद ना कीजुअे. इश़ाटि बारी तआला है, “अे लोगो ! जो इमान लाअे हो ! अल्लाह की इताअत करो, रसुल की इताअत करो और (कीसी दुसरे की इताअत करके) अपने अअ्माल बरबाद ना करो.” (सूर: मुहम्मद, आ. नं. ३३)